'जागनी रत्न एवं जागनी'

(प्रवचन प्रतियोगिता २००१)

यह ब्रह्मांड जागनी का ब्रह्मांड है। हमने लीला को तीन तकरारों में देखा। पहला बृज जिसे नींद में देखा, दूसरा रास आधी नींद और आधी जाग्रत अवस्था में तीसरा जागनी का ब्रह्मांड जिसे हम पूरी तरह जाग कर देख रहे हैं क्योंकि इस बार हमें कुलजम वाणी मिली है। इस वाणी से ही हमने अपने धनी के पूर्ण स्वरूप और अपनी निसबत की पेहचान करके धनी के अखण्ड सुखों की लज्जत लेनी है। हम अपने आपको जाग्रत भी तभी कह सकते हैं जब यह वाणी हमें बाण की तरह हिरदे में चुभने लगे, सारा ब्रह्मांड आग की तरह लगने लगे हमारी सुरता मूल-मिलावा में धनी की शोभा में लग जाए वहां की गली गली कूचे कूचे में घूमने लगे, हमारी आतम जिस प्रेम और आनन्द से बिछड़ी है उसका अपने धनी से मिलन ही तो जागनी है। जागनी तो मूल स्वरूप के आवेश से हो रही है परन्तु इसका भार श्यामाजी को दिया जिन्होंने दो जामों में लीला की। पहला देवचन्द्र जी दूसरा जामा इन्द्रावती जी के तन में हकी स्वरूप ने पांचों शक्तियों के साथ लीला की। स्वयं श्री जी साहब ने पंचभौतिक तन से अन्तर्ध्यान होने से पहले श्री महाराजा छत्रसाल जी को जिन्हें अमीरूल मोमिन कहा गया बुलाकर छठे दिन में जागनी का भार संभाला कहा बातूनी रूप में जागनी तो राज जी ही करेंगे परन्तु जाहिरी में ये कार्य मैं तुम्हें सौपता हूँ।

साथ सौंप्या आप श्री राज को, जाहिर में श्री महाराज।
अब हम फिरत धाम को, तुम रहो सावचेत आज।।

महाराजा छत्रसालजी जिन्होंने वाणी को श्री जी साहब का स्वरूप मानकर सिंहासन पर विराजमान किया और उस वाणी को जगह-जगह पर फैलाया। उनके पश्चात अनेकों परमहंस हुए परन्तु वाणी सुन्दरसाथ से कोसों दूर रही वह रूमालों में बंध कर दबी रही क्योंकि वाणी में पहले से ही लिखा था १५० वर्ष तक ढंपी रहेगी और देवचन्द्र जी की पाती के अनुसार हिजरी १२५७ से १४०७ तक अर्थात १५० वर्ष तक वाणी ढंपी रहेगी उसके पश्चात वाणी का प्रचार-प्रसार होगा। जागनी की राह पर चलने के लिए तन-मन-धन और जीव को भी कुर्बान करना पड़ता है, हड्डियों का चूरमा भी बन जाता है। कसनी की राह पर चले हमारे आदरणीय जागनी रत्न सरकार श्री जिनका नाम था श्री जगदीश चन्द्र जी आहुजा। आपका जन्म ५ फरवरी १९२५ को श्री काशी राम जी आहुजा के घर दुआ। आपका लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से हुआ। आपके घर में प्रणामी समाज के विद्वान भी आते थे आपको शिक्षा के लिए गांव से शहर आना पड़ा वहां पर आप मंदिर भी जाते थे परन्तु वहां पर अगुओं के बीच कटुता के कारण दूसरे धर्मों का अध्ययन करने लगे, आपका झुकाव रामायण व हनुमान चालीसा में था। एक बार जन्माष्टमी के अवसर पर विष्णु की महिमा गाते सुनकर आपके अन्दर बैठी आतम सहन न कर पाई और कह दिया आप जिस विष्णु

Nijanand App

के गुण गाते हैं वह तो परमधाम में जा ही नहीं सकते। इसी उपलक्ष में उन्होंने प्रश्न पूछे तो वह संतुष्ट सटीक उत्तर नहीं दे सके, यहां से शुरू हुई प्रीतम की खोज।

पिया मैं बेहोत भांत तोको खोजिया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी कोई बताओ पिया ठौर।।

सांख्य दर्शन में लिखा है जैसे एक भंवरा अपने लक्ष्य को पाने के लिए एक फूल से दूसरे फूल तक जाता है इसी तरह आप कभी पन्ना जी में विद्वानों के पास, कभी करनाल गादी पती महाराजों के पास। अन्त में आप पहुंचे 'शेरपुर' जहाँ सतगुरू से मिलन हुआ बिछड़ी हुई आत्मा को उसका प्रीतम मिल गया। कौन? मानव तन नहीं वह सत्य जो आज भी सत्य है कल भी सत्य था अनन्तकाल तक सत्य रहे जो सत् की ही पेहचान कराए तभी तो कहा है तुम स्वरूप तुममें स्वरूप तुम स्वरूप के संग, उसे ही सतगुरू की शोभा मिलती है। इसी सत की राह पर चले जड़ौदा पाण्डे में जन्में झंडूदत्त जी, जब आपको शरीर की भी सुध न रही तन पर कपड़ा न रहा तब राजजी ने दर्शन दिए कहा "तुम परमधाम की" रतनबाई की वासना हो। वह प्रेम के सागर थे उनके अन्दर प्रेम की लहरें निरन्तर बहती थी आपकी सूरता २५ पक्षों में विचरण करती थी आपके पास आने वाला सुन्दरसाथ प्रेम में डूबे बिना नहीं रहता था जब आप सरकार श्री वहां पहुंचे तो कहा-तुम्हें जहां आना था आ गया आगे चिन्ता की कोई जरूरत नहीं यह भी समझा दिया सेवा कहने के लिए नहीं करने के लिए होती है "और कछु न इन समान, जो दिल सनकूल करे पहचान"। उनकी आवाज का जादू शुरू हुआ सेवा का दौर सुन्दरसाथ जो श्यामाजी का अंग है उन्हें हर तरह से सुविधा देना उन्हें आश्रम पहुंचाना वापिस छोड़ना, पन्ना जी में भंडारा शुरु करवाना। सुन्दरसाथ जो आज दिन तक आग पानी पत्थर की पूजा कर रहे थे उन्हें छुड़वाकर ब्रह्म विद्या को देवी मानकर सभी संस्कार शुरू करवाए। अब आपने सतगुरू के साथ कशमीर यात्रा की वहां पर आपने धनी के दीदार किए आपकी आतम ने २५ पक्षों में विचरण किया आपका दिल धनी का अर्श हुआ। महाराज जी के अन्तर्ध्यान होने के पश्चात आपने इन्चौली आश्रम को प्रस्थान किया आपने सोचा हम मूल-मिलावा में धनी के चरणों में अंग से अंग लगाकर बैठे है वहां पर वायदे किये थे तूं भूली तो मैं जगाऊंगी मैं भूलू तो तू जगाना वायदे को पूरा करना चाहिए।

मैं भूलो तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।
तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए।।

सरकार श्री के मुखारबिन्द से कुलजम वाणी और बीतक साहब की चर्चा होने लगी, आपका एक कदम पंजाब तो दूसरा गुजरात आपने शहरों में ही नहीं गांव-गांव में जागनी शुरू की ऐसे आश्रम भी थे जहां न रंग ढंग की व्यवस्था न रोशनी की लेकिन जहां चर्चा के पूर के पूर हो सुन्दरसाथ को आतम की खुराक मिले सुन्दर अनुशासन मिले वहां तो वह टिड्डी दल की तरह भागे चले आते हैं। शिविर पर शिविर लगने लगे आपके शिविरों की मांग बढ़ने लगी। आपकी जागनी को देखकर पदमावती पुरीधाम पन्नाजी से सूचना मिली हम आपको सम्मान सूचक विशेषण देना चाहते हैं।

Nijanand App

सुन्दरसाथ ने सोचा आपको महाराज राम रतन दास जी के नाम से जोड़कर "जागनी रत्न के नाम से सुशोभित किया जाए। आपकी सभी शहरों से आए प्रमुख तथा कांलिम्पौंग से आए मोहन प्रियाचार्य जी ने जागनी रत्न के नाम से सुशोभित किया वहां से आई शाल भी ओढ़ाई सुन्दरसाथ जी आज तक छुआ छूत व सूतक आदि के चक्र में पड़कर वाणी को घर नहीं पधराता था आपने न सहने वाले कष्टों को सहकर उस वाणी को छपवा कर घर-घर पहुंचा दिया उन्हें वाणी से उनकी निसबत की पेहचान कराई। आपके अर्श दिल से भेद खुलने लगे आपने सुन्दरसाथ जो आजतक बल्लभाचार्य के मतानुसार गादीवाद को अपनाए हुआ था उससे दूर किया सही मायनों में गादी का अर्थ बताया।" अपने आपको धनी पर समर्पित करना ही गादी है। आपने कहा प्राणनाथजी का कोई गुरू नहीं, पारब्रह्म तन का नाम नहीं है वह तो आत्माओं के प्रीतम है सबके श्रीजी साहेब हैं किसी एक जाति के नहीं।

साहिब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सबका झगड़ा मेट के, या दुनिया या दीन।।

आपने गांव-गांव शहर-शहर में ही नहीं पूरे भरतखण्ड और विदेश में जो सुन्दरसाथ बस गए थे उन्हें जाकर जगाया। अमेरिका में आपने वाणी को बीतक के साथ जोड़कर एक - एक भेद को खोला सोई हुई आतम को झंझोड़ा तो सुन्दरसाथ आपको धन्य - धन्य कहने लगे। आपका लक्ष्य धाम धनी को जाहिर करना, सुन्दरसाथ को वाणी के साथ जोड़ना था। इसके लिए आपके वाणी पर आधारित भजन, किरंतन, कव्वाली, प्रवचन प्रतियोगितायें शुरू की, आडियो, वीडियो, कैसेट टेलीविजन, इण्टरनेट के माध्यम से धनी को जाहिर किया। यही नहीं आपने निःशुल्क पत्रिका 'धाम दर्शन भी घर-घर' पहुंचा दी, स्थान - स्थान पर प्राणनाथ जी मंदिर बनवा दिए। बड़ौदा में विशाल आश्रम बनवा दिया। सुन्दरसाथ को संसार मेरा भरतार, सत्य दर्शन, निजानन्द दर्शन, पढ़ो सोचो और समझो और वह दुर्लभ साहित्य भविष्य पुराण, माहेश्वर तन्त्र, बुद्धिगीता और स्तोत्र सत्यांजली भी उपलब्ध करवा दी। आपने शारीरिक और मानसिक रूप से कष्टों को सहकर प्यार की माला पिरोई क्योंकि तारतम का सार सुन्दरसाथ की जागनी उन्हें क्षर अक्षर से परे अक्षरातीत की पेहचान कराना है।

तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निखार।
निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार।।

अगर आज हम भी चाहते हैं कि हम अपने घर चलें तथा संसार को भी मुक्ति मिले इसके लिए हमें वाणी को फैलाना होगा, हादी के कदमों पर कदम रखना होगा। वाणी से विवेक लेकर रहनी पर आना होगा। जीव जो मोह से पैदा हुआ है वह इन्द्रियों से घिरा हुआ है। मोमिन ही इन इन्द्रियों से लड़ाई करेंगे और संसार को पीठ देंगे। इस जागनी के राह पर कष्टों को भी सहना पड़ेगा जो कष्ट १२ मोमिनों ने सहे स्वयं श्री जी साहब जब कामा पहाड़ी से आमेर फिर सांगानेर पहुंचे कई-कई दिन भूखे रहना पड़ा। स्वयं सरकारश्री ने क्या क्या कष्ट नहीं उठाए। इस राह पर सिर पर कफन

Nijanand App

बांधना पड़ता है दुनियां तो ऐसी है प्यार का संदेश देने वालों को पत्थर की मार मारती है। लोगों ने मुहम्मद साहब ओर ईसा मसीह का यही हाल किया। जागनी की राह पर चलने वाले सुन्दरसाथ मौत से नहीं डरते मौत तो उनसे पनाह मांगती है वह मान, अपमान, सुख व दुःख की परिधि से बाहर होते हैं। शरीर की मैं खुदी को मारकर प्रेम की राह पर सुन्दरसाथ की चरनों की धूल बन कर चलते हैं वह इत भी धन-धन उत भी धंन धंन।

ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उतम बास।
इस्क न खाने देवे श्वास, ज्यों अग्नी न छोड़े दाना घास।।

किरन मेहता, दिल्ली

भजन

तर्ज - रिम झिम बरसता.....

मूल मिलावे में उठेंगी हम सारी
सामने होगी युगल जोड़ी प्यारी।
एक दूजे को अंक में भरके आनन्द में झूमेगी
ऐसी मिलन की वो घड़ी होगी प्यारी सामने।

मुस्कुरा रहे हैं मुस्कुराते ही रहेगें,
धनी आनन्द का खेल खेलाते ही रहेंगे
तौबा जुदाई से होगी हमारी-सामने होगी

उठेगी मूल मिलावे में तब माया कैसे भूलेगी
भीगी भीगी पलको से हम धनी से फिर पूछेगी
फिर तो न ऐसी करोगे दशा हमारी-सामने..

नैनों में भरके प्रीतम की बंद ऐसे की लूँगी
खोलूंगी न फिर कभी, इश्क में यूँ डूबूँगी
आनन्द की लीला फिर होगी शुरू हमारे सामने

कुलदीप मक्कड़
अबोहर

(नोट : प्रतियोगिताओं के शेष भजन व प्रवचन अगले अंक में)

Nijanand App